VAISESIKA - PARTICULARITY

वैशेषिक - विशेष

By- Dr. Arun Kumar Sinha
Asso. Professor, Philosophy Department
Raja Singh College, Siwan
(For Part- 1 Hons./Subs. Students)

विशेष वैशेषिक दर्शन का पाँचवा पदार्थ है। वैशेषिक दर्शन का नामकरण विशेष को एक स्वतंत्र पदार्थ मानने से हुआ है। विशेष सामान्य का विपरीत है सामान्य के द्वारा व्यक्तियों का एकीकरण होता है जबकि विशेष के द्वारा नित्य व्यक्तियों का एक दूसरे से भेद होता है। प्रशस्तपाद विशेष की स्वतंत्र सत्ता मानते हैं जो नित्य द्रव्य में रहता है और उन्हें परस्पर अलग करता है। वैशेषिक आत्मा, मनस ,आकाश, दीक, काल , पृथ्वी, जल और वायु आदि के परमाणुओं की सत्ता मानते हैं। विशेष की सत्ता अलग मानी गई है। विशेष एक नित्य द्रव्य कि वह विलक्षणता है जिससे वह अन्य नित्य द्रव्यों से अलग पहचाना जाता है। दिक एक नित्य द्रव्य है।काल भी एक नित्य द्रव्य है उसका विशेष उसे दिक इत्यादि अन्य नित्य द्रव्य से अलग करता है। इसी तरह प्रत्येक आत्मा, प्रत्येक मनस, आकाश, पृथ्वी, जल और वायु इत्यादि प्रत्येक परमाणु का एक एक विशेष होता है। प्रत्येक आत्मा और प्रत्येक मनस का विशेष उसे न केवल दिक, काल इत्यादि नित्य द्रव्य से अलग बल्कि अन्य आत्माओं और मनसों से भी अलग करता है। इसी प्रकार प्रत्येक परमाणु का विशेष उसे अन्य नित्य द्रव्य से तथा अन्य सजातीय और विजातीय परमाणुओं से भी अलग करता है। विशेष केवल नित्य द्रव्य में ही समवेत होता है। प्रत्येक नित्य द्रव्य का विशेष उसे अपना व्यक्तित्व प्रदान करता है। विभिन्न द्रव्यों के विशेषों को एक दूसरे से अलग करने के लिए अन्य विशेषों की जरूरत नहीं पड़ती। अगर विशेषों को एक दूसरे से अलग करने के लिए अन्य विशेष माने जाएं तो अन्य विशेषों की भी परस्पर अलग करने के लिए और विशेष मानने पड़ेंगे। इस तरह से अनावश्यक दोष हो जाएगी । परमाणु अनंत संख्या वाले हैं उसी प्रकार विशेष की संख्या भी अनंत हैं।

सावयव पदार्थ जैसे कुर्सी, टेबल, आदि अपने अवयवों के भिन्नता ही के द्वारा एक दूसरे से पहचान लिये जाते हैं।उनका अन्तर समझने के लिये विशेष की कल्पना आवश्यक नहीं है।केवल निरवयव नित्य द्रव्यों का मूल अन्तर विशेष के कारण होता है।ऐसे द्रव्य असंख्य हैं इसलिये विशेष भी असंख्य हैं। विशिष्ट द्रव्य अपने विशेष के कारण पहचाने जाते हैं। विशेष स्वतः पहचाने जाते हैं। विशेष का विश्लेषण नहीं किया जा सकता ।विशेष का प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं होता ।वे परमाणु की तरह अगोचर पदार्थ है।

नव्य न्याय विशेष को एक स्वतंत्र पदार्थ नहीं मानता उसका तर्क यह है कि अगर विशेष अन्य विशेषों की सहायता के बिना स्वयं अपना भेद कर सकते हैं तो परमाणुओं को

भी अपना भेद करने के लिए विशेषों की सहायता की क्या जरूरत ? नव्य न्याय की तरह वेदांत और मीमांसा भी विशेष को एक स्वतंत्र पदार्थ नहीं मानते।

वैशेषिक ने विशेष को एक स्वतंत्र पदार्थ माना है ।उनका कहना है कि विशेष उतना ही वास्तविक है जितना कि आत्मा या अन्य पदार्थ जिनमें वह निवास करता है। यदि नित्य द्रव्य की सत्ता है तब उन द्रव्यों को पृथक करने वाला गुण भी वास्तविक है।